(c) Yes, Sir.

(d) General Category: 3126 S/Caste: 1302.

Allotment of flats is based on construction of the flats & completion thereof, which interm depends on the availability of funds and land. As such no time frame can be given by when alI the registered applicants will be accommodated.

Mandays created through NREP, RLEGP etc

1264. SHRIMATI KANAK MUKHERJEE: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) the total' number of mandays generated in West Bengal through implementation of Food for Work Programme N.R.E.P, and Rural Landless Employment Guarantee Programme during the last 3 years; and

(b) the particulars of durable assets created in West Bengal on this account during the same period?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF RURAL DEVELOPMENT IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI RAMANAND YADAV): (a) Food for Work Programme was replaced by National Rural Employment Programme from October, 1980. No separate Food for Work Programme is now being implemented.

The total number of mandays generated under NREP and RLEGP in West Bengal during the last three years is as under:—

(Lakh Mandays)

	1983-84	1984-85	1985-86	Total
NREP .	227.78	211.87	130.95	630.60
RLEGP .		72.83	110.64	183,4'

(b) Statements I and II indicating the assets created under NREP and RLEGP respectively during the last three years in the state (i,e. 1983-84, 1984-85 and 1985-86) are annexed. *[See* Appendix CXLI, Annexure No. 51-A and 51-B].

कृषि-मेले

1265. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार देश के विभिन्न संस्थानों पर कृषि मेले आयोजित करती है जैसा कि मुंगेर जिले के सफियाबाद नामक स्थान पर आयोजित किया गया था जिसके प्रचार पर लाखों रुपए खर्च किये गये थे ;

(ख) क्या उस मेले में दलहन और तिलहन की अधिक उपज देने वाली किस्में, जो इस देश में कम उपलब्ध हैं, प्रदर्शित की गई थीं, और यदि हां, तो उनका ब्यौरा क्या है और उनकी प्रति एकड़ उपज क्या है ;

(ग) क्या बेहतर और अधिक उपयोगी नस्लों की गायें भी वहां प्रदर्शित की गई थीं ;

(घ) क्या फसलें बरबाद कर देने वाली खर-पतवार को नष्ट करने की विधियां बताई गयी थीं ;

(ङ) क्या छोटे पावर टिलरों का, जो छोटे-छोटे किसानों को तत्काल लाभ प्रदान कर सकते हैं, प्रदर्शन भी किया गया था , और

(च) क्या गोबर गैस बनाने की कोई ऐसी विधि भी प्रदर्शित की गई थी जिसमें कम खर्च पर, सरल ढंग से और अधिक गैस प्राप्त की जा सकती है ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा): (क) जी हां, श्रीमन् । तथापि यह मेला लोक सभा के माननीय सदस्य प्रो. डी. पी. यादव के नेतृत्व में विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी अभिकरणों की सहायता से सफीयाबाद, मुंगेर जिला (बिहार) में आयोजित किया गया था ।

(ख) जी हां, श्रीमन् । सरसों की दो उन्नत किस्में अर्थात् पूसा बोल्ड तथा पूसा बारानी का, जिनकी उत्पादन क्षमता 22-25 क्विंटल प्रति हैक्टर है, मेले में प्रदर्शन किया गया था । दालों की पांच प्रमुख फसलों यानि चना (पूसा-240 तथा पूसा 256) ; मटर (डी एम आर-।।) ; मसूर (एल-4076 तथा एल 830) ; मूंग (पी एस-16) ; तथा अरहर (पूसा 84) की सात उन्नत किस्मों का भी मेले में प्रदर्शन किया गया था जिनकी उत्पादन क्षमता 10-25 क्विंटल प्रति हैक्टर है ।

(ग) जी नहीं, श्रीमन् ।

(घ) जी हां, श्रीमन् । प्रमुख खरपतवारों की खर-पतवार नियंत्रण की नियन्त्रण प्रौद्योगिकी जैसे कानटेली (**सेरीलियम अरवेन्स**), बथुआ (**चेनोपोडियम अलबम**) बन्दराबन्दरी (**फलारिस माइनर**) तथा विल्डओट्स (**अवेना स्प.**) का प्रदर्शन किया गया था तथा किसान गोष्ठी में इन पर विचार विमर्श किया गया था ।

(ङ) जी नहीं, श्रीमन् ।

(च) जी हां, श्रीमन्

पावर टिलर्स

1266. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव** : क्या **कृषि मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कृषि मंत्रालय के अधीन कोई यांत्रिकी विभाग काम कर रहा है, यदि हां, तो इसके मुख्य मुख्य कार्य क्या हैं और इस पर कुल कितना वार्षिक खर्च हो रहा है ;

(ख) क्या इस विभाग ने पावर टिलर्स के संबंध में कोई जानकारी प्राप्त की है और क्या इनकी उपयोगिता और कीमत किसानों के हित में है ;

(ग) क्या इस विभाग ने देश के विभिन्न भागों में चल रहे विभिन्न प्रकार के पंपिंग सेटों के संबंध में कोई अनुसंधान किया है और यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह मशीनरी सरलता से और सस्ती कीमतों पर किसानों को उपलब्ध हो, इस विभाग ने क्या कदम उठाये हैं और क्या इस विभाग को पावर टिलर्स के बारे में कोई ज्ञान ही नहीं है ; और

(घ) क्या यह सच है कि किसान इन पावर टिलर्स का जोतने, सिंचाई, छिड़काव, गाहने और ढुलाई आदि के कार्य में सरलता से उपयोग कर सकता है और यदि हां, तो इसके प्रचार और प्रसार में क्या बाधाएं हैं, और यदि नहीं, तो किसानों में इसे लोकप्रिय बनाने के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा): (क) कृषि और सहकारिता विभाग के अन्तर्गत कृषि उपकरण और मशीनरी प्रभाग के केन्द्रीय फार्म मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थानों के अधीन इंजीनियरिंग संस्थाएं हैं जिनका परिसीमित उद्देश्य कृषि मशीनों के कार्यनिष्पादन के गुणों का परीक्षण करना तथा उनको चलाने, उनकी मरम्मत एवं रख-रखाव में प्रशिक्षण देना है । यह प्रभाग उन्नत कृषि उपकरणों तथा मशीनरी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये जिम्मेदार है । इस प्रभाग के अधीन योजनाओं पर 1985-86 में कुल 248.07 लाख रुपये का खर्च हुआ है ।

(ख) केन्द्रीय फार्म मशीनरी प्रशिक्षण और परीक्षण संस्थान, बुदनी ने देश में निर्मित पावर--टिलर्स के कार्य-निष्पादन संबंधी परीक्षण किए हैं और उन्हें संतोषजनक पाया है । पावर टिलर्स की लोकप्रियता बढ़ती रही है जो कि उनकी बिक्री से सिद्ध होता है जो 1983-84 के 2901 से बढ़कर 1985-86 में 3754 हो गई ।